॥ तैत्तिरीय ब्राह्मणम् ॥

॥चतुर्थः प्रश्नः॥

॥ तैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके चतुर्थः प्रपाठकः ॥

ब्रह्मंणे ब्राह्मणमालंभते। क्षत्राय राजन्यम्ँ। मरुद्भ्यो वैश्यम्ँ। तपंसे शूद्रम्। तमंसे तस्करम्। नारंकाय वीरहणम्ँ। पाप्मनेँ क्लीबम्। आक्रयायांयोगूम्। कामांय पुꣳश्चलूम्। अतिंक्रुष्टाय मागधम्॥१॥

गीताय सूतम्। नृत्ताय शैलूषम्। धर्माय सभाचरम्। नर्माय रेभम्। नरिंष्ठायै भीमलम्। हसांय कारिम्ँ। आनन्दाय स्त्रीषखम्। प्रमुदें कुमारीपुत्रम्। मेधायैं रथकारम्। धैर्याय तक्षांणम्॥२॥

श्रमांय कौलालम्। मायायैं कार्मारम्। रूपाय मणिकारम्। शुभें वपम्। शरव्यांया इषुकारम्। हेत्यै धंन्वकारम्। कर्मणे ज्याकारम्। दिष्टाय रज्जुसर्गम्। मृत्यवें मृगयुम्। अन्तंकाय श्वनितम्ँ॥३॥

सन्धयें जारम्। गेहायोपपतिम्। निरृंत्यै परिवित्तम्। आर्त्यै परिविविदानम्। अराँध्यै दिधिषूपतिम्ँ। पवित्रांय भिषजम्ँ। प्रज्ञानांय नक्षत्रदर्शम्। निष्कृंत्यै पेशस्कारीम्। बलांयोपदाम्। वर्णायानूरुधम्ँ॥४॥

न॒दीभ्यः॑ पौञ्जि॒ष्टम्। ऋ॒क्षीका᳚भ्यो॒ नैषा॑दम्। पु॒रु॒ष॒व्या॒घ्राय॑ दु॒र्मदम्᳚। प्र॒यु॒द्भ्य उन्म॑त्तम्। ग॒न्ध॒र्वा॒प्स॒राभ्यो॒ व्रात्यम्᳚। स॒र्प॒दे॒व॒-ज॒नेभ्योऽप्र॑तिपदम्। अवे᳚भ्यः कित॒वम्। इ॒र्यता॑या॒ अकि॑तवम्। पि॒शा॒चेभ्यो॑ बिदलका॒रम्। या॒तु॒धाने᳚भ्यः कण्टकका॒रम्॥५॥

उ॒थ्सा॒देभ्यः॑ कु॒ब्जम्। प्र॒मुदे॑ वाम॒नम्। द्वा॒र्भ्यः॑ स्रा॒मम्। स्वप्ना॑या॒न्धम्। अध॑र्माय बधि॒रम्। सं॒ज्ञाना॑य स्मरका॒रीम्। प्र॒का॒मोद्या॑योप॒सदम्᳚। आ॒शि॒क्षायै᳚ प्र॒श्निनम्᳚। उ॒प॒शि॒क्षाया॑ अभिप्र॒श्निनम्᳚। म॒र्यादा॑यै प्रश्नविवा॒कम्॥६॥

ऋत्यै᳚ स्ते॒नहृ॑दयम्। वैर॑हत्याय॒ पिशु॑नम्। विवि॑त्त्यै क्ष॒त्तारम्᳚। औप॑द्रष्टाय सङ्ग्र॒हीतारम्᳚। बला॑यानुच॒रम्। भू॒म्ने प॑रिष्क॒न्दम्। प्रि॒याय॑ प्रियवा॒दिनम्᳚। अरि॑ष्ट्या अश्वसा॒दम्। मेधा॑य वासः पल्पू॒लीम्। प्र॒का॒माय॑ रजयि॒त्रीम्॥७॥

भायै॑ दार्वाहा॒रम्। प्र॒भाया॑ आग्ने॒न्धम्। नाक॑स्य पृ॒ष्ठाया॑भि-षे॒क्तारम्᳚। ब्र॒ध्नस्य॑ वि॒ष्टपा॑य पात्रनि॒र्णेगम्। दे॒व॒लो॒काय॑ पेशि॒तारम्᳚। म॒नु॒ष्य॒लो॒काय॑ प्रकरि॒तारम्᳚। सर्वे᳚भ्यो लो॒केभ्य॑ उपसे॒क्तारम्᳚। अव॑र्त्यै व॒धायो॑पमन्थि॒तारम्᳚। सु॒व॒र्गाय॑ लो॒काय॑ भाग॒दुघम्᳚। वर्षि॑ष्ठाय॒ नाका॑य परिवे॒ष्टारम्᳚॥८॥

अर्मे᳚भ्यो हस्ति॒पम्। ज॒वाया᳚श्व॒पम्। पुष्ट्यै᳚ गोपा॒लम्। तेज॑सेऽजपा॒लम्। वी॒र्या॑याविपा॒लम्। इरा॑यै की॒नाशम्᳚।

कीलालाय सुराकारम्। भद्राय गृहपम्। श्रेयसे वित्तधम्। अध्यक्षायानुक्षत्तारम्॥९॥

मन्यवेऽयस्तापम्। क्रोधाय निसरम्। शोकायाभिसरम्। उत्कूलविकूलाभ्यां त्रिस्थिनम्। योगाय योक्तारम्। क्षेमाय विमोक्तारम्। वपुषे मानस्कृतम्। शीलायाञ्जनीकारम्। निर्ऋत्यै कोशकारीम्। यमायासूम्॥१०॥

यम्यै यमसूम्। अथर्वभ्योऽवतोकाम्। संवथ्सराय पर्यारिणीम्। परिवथ्सरायाविजाताम्। इदावथ्सरायापस्कद्वरीम्। इद्वथ्सरायातीत्वरीम्। वथ्सराय विजर्जराम्। संवथ्सराय पलिक्नीम्। वनाय वनपम्। अन्यतोरण्याय दावपम्॥११॥

सरोभ्यो धैवरम्। वेशन्ताभ्यो दाशम्। उपस्थावरीभ्यो बैन्दम्। नड्वलाभ्यः शौष्कलम्। पार्याय कैवर्तम्। अवार्याय मार्गारम्। तीर्थेभ्य आन्दम्। विषमेभ्यो मैनालम्। स्वनेभ्यः पर्णकम्। गुहाभ्यः किरातम्। सानुभ्यो जम्भकम्। पर्वतेभ्यः किम्पूरुषम्॥१२॥

प्रतिश्रुत्काया ऋतुलम्। घोषाय भषम्। अन्ताय बहुवादिनम्। अनन्ताय मूकम्। महसे वीणावादम्। क्रोशाय तूणवध्मम्। आक्रन्दाय दुन्दुभ्याघातम्। अवरस्पराय शङ्खध्मम्। ऋभुभ्योजिनसन्धायम्। साध्येभ्यश्चर्मम्णम्॥१३॥

बीभथ्सायै पौल्कसम्। भूत्यै जागरणम्। अभूत्यै स्वपनम्।

तुलायै वाणिजम्। वर्णाय हिरण्यकारम्। विश्वेभ्यो देवेभ्यः सिध्मलम्। पश्चाद्दोषाय ग्लावम्। ऋत्यै जनवादिनम्। व्यृद्ध्या अपगल्भम्। सꣳशराय प्रच्छिदम्॥१४॥

हसाय पुꣴश्चलूमा लभते। वीणावादं गणकं गीताय। यादसे शाबुल्याम्। नर्माय भद्रवतीम्। तूणवध्मं ग्रामण्यं पाणिसङ्घातं नृत्ताय। मोदायानुक्रोशकम्। आनन्दाय तलवम्॥१५॥

अक्षराजाय कितवम्। कृताय सभाविनम्। त्रेताया आदिनवदर्शम्। द्वापराय बहिः सदम्। कलये सभास्थाणुम्। दुष्कृताय चरकाचार्यम्। अध्वने ब्रह्मचारिणम्। पिशाचेभ्यः सैलगम्। पिपासायै गोव्यच्छम्। निरृत्यै गोघातम्। क्षुधे गोविकर्तम्। क्षुत्तृष्णाभ्यान्तम्। यो गां विकृन्तन्तं माꣳसं भिक्षमाण उपतिष्ठते॥१६॥

भूम्यै पीठसर्पिणमा लभते। अग्नयेऽꣳसलम्। वायवे चाण्डालम्। अन्तरिक्षाय वꣳशनर्तिनम्। दिवे खलतिम्। सूर्याय हर्यक्षम्। चन्द्रमसे मिर्मिरम्। नक्षत्रेभ्यः किलासम्। अह्ने शुक्लं पिङ्गलम्। रात्रियै कृष्णं पिङ्गाक्षम्॥१७॥

वाचे पुरुषमा लभते। प्राणमपानं व्यानमुदानꣳ समानं तान् वायवे। सूर्याय चक्षुरा लभते। मनश्चन्द्रमसे। दिग्भ्यः श्रोत्रम्। प्रजापतये पुरुषम्॥१८॥

अथैतानरूपेभ्य आलंभते। अतिंह्रस्वमतिंदीर्घम्। अतिंकृशमत्यꣳसलम्। अतिंशुक्लमतिंकृष्णम्। अतिंश्लक्ष्णमतिंलोमशम्। अतिंकिरिटमतिंदन्तुरम्। अतिंमिर्मिरमतिंमेमिषम्। आशायै जामिम्। प्रतीक्षायै कुमारीम्॥१९॥

ब्रह्मंणे गीताय श्रमांय सन्धयै नदीभ्यं उथ्सादेभ्य ऋत्यै भाया अर्मेभ्यो मन्यवे यम्यै दशंदश सरोभ्यो द्वादंश प्रतिश्रुत्कांयै बीभथ्सायै दशंदश हसांय सप्ताक्षंराजाय त्रयोंदश भूम्यै दशं वाचे षडथ नवैकान्नविꣳशतिः॥१९॥

ब्रह्मंणे यम्यै नवंदश॥१९॥

ब्रह्मंणे कुमारीम्॥

हरिंः ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके चतुर्थः प्रपाठकः समाप्तः॥

generated on **February 28, 2025**

Downloaded from

http://stotrasamhita.github.io | StotraSamhita | Credits